



NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2011

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER I

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours

80 marks

These marking guidelines were used as the basis for the official IEB marking session. They were prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom were required to attend a rigorous standardisation meeting to ensure that the guidelines were consistently and fairly interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

At standardisation meetings, decisions are taken regarding the allocation of marks in the interests of fairness to all candidates in the context of an entirely summative assessment.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines, and different interpretations of the application thereof. Hence, the specific mark allocations have been omitted.

भाग क

प्रश्न एक

१. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसपर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में हिन्दी में दीजिए।

(३०)

भारत मिलाप

राजा दशरथ की तीन रानियाँ थीं। कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा। श्रीरामचन्द्र जी सभी माताओं को बराबर चाहते थे। एक दिन राजा दशरथ ने गुरु वशिष्ठ जी से कहा “गुरुवर ! अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मेरे विचार से श्रीरामचन्द्र जी राजकाज सम्भालने के योग्य हो गए हैं। मैं उन्हें युवराज बनाना चाहता हूँ।” गुरु वशिष्ठ जी ने सहर्ष अनुमोदन किया। राजतिलक की तिथि निश्चित की गई। “राम राजा बनेगा”। यह समाचार फैलने में देर न लगी। नगर भर में आनन्द छा गया। नगरवासी फूले नहीं समाते थे। मगर कैकेयी राजा से चिढ़ गई। उसने महाराज से दो वर माँगे। भरत के लिए राज्य और श्री रामचन्द्रजी को चौदह वर्ष के लिए वनवास। राजा ने कैकेयी को बहुतेरा समझाया कि श्री राम को वनवास मत भेजो। परन्तु वह एक न मानी। शोकातुर राजा दशरथ मूर्छित होकर गिर पड़े।

श्रीरामचन्द्र जी (कैकेयी से) हे माता ! पिताजी की बेहोशी का क्या कारण है।

कैकेयी- राम ! महाराज मुझसे दो वचन हार चुके हैं। मैंने भरत के लिए राज्य और तेरे लिए चौदह वर्ष का वनवास माँगा है।

श्रीरामचन्द्र जी — माता पिता की आज्ञा का पालन करना पुत्र का धर्म है। हे माता मैं कितना भाग्यवान हूँ कि मुझे वनवास और भैया भरत को राजगद्दी मिली है। मैं अभी वन जाने की तैयारी करता हूँ।

श्रीरामचन्द्रजी, सीता और लक्ष्मण वन जाने लगे तो सम्पूर्ण अयोध्या शोक के सागर में डूब गई। व्याकुल राजा दशरथ राम हे राम कहते हुए चल बसे। उस समय श्री भारत और शत्रुघ्न जी ननिहाल गए हुए थे। जब लौटे तो उन्हें पिता की मृत्यु तथा राम लक्ष्मण और सीता के वन गमन का समाचार मिला। पिता की अंत्येष्टि किया करके भरत श्रीरामचन्द्र जी से मिलने के लिए, वन की ओर चल पड़े। राम भरत मिलाप का दृश्य बड़ा रोमांचित था। भरत जी ने श्रीरामचन्द्रजी को अयोध्या लौटकर राज्य संभालने का बहुत आग्रह किया।

परन्तु श्रीरामचन्द्र जी बोले “हे भरत ! वनवास तो मुझे मिला है । स्वर्ग में पिताजी की आत्मा की शान्ति और माताजी के आदेश को पूरा करने के लिए मुझे वन में रहना ही होगा ।”
“भैया राम ! ऐसी बात है तो मुझे अपनी चरण पादुका दीजिए । मैं उसे राजसिंहासन पर रखकर राजकाज सम्भालूँगा । खड़ाऊँ लेकर भरतजी अयोध्या लौट आए । श्रीराम सीता और लक्ष्मण वन में आगे बढ़े ।

- १.१ राजा दशरथ गुरु वशिष्ठ जी से क्या कहा । २
“गुरुवर ! अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ । मेरे विचार से श्रीरामचन्द्र जी राजकाज सम्भालने के योग्य हो गए हैं । मैं उन्हें युवराज बनाना चाहता हूँ ।
- १.२ “शोक के सागर में डूबना ।” इस कहावत को अपने शब्दों में हिन्दी में समझाइए । ६
निराश होना । संकट विलाप । दुखी होना ।
- १.३ निम्नलिखित वाक्य को भविष्यत् काल में लिखिए :
उस समय श्री भारत और शत्रुघ्न जी ननिहाल गए हुए थे । ४
जब सब कुछ हुआ तब भारत और शत्रुघ्न अपने नानी के घर पर थे ।
- १.४ अपने शब्दों में समझाइए । ६
१.४.१ फूले नहीं समाना । बहुत खुश ।
१.४.२ चल बसना मृत्यु होना
- १.५ विलोल शब्द लिखिए । ८
१.५.१ भाग्यवान् अभाग १.५.२. मृत्यु जीवित १.५.३. गमन पृथ्वी
१.५.४ योग्य
- १.६ समानार्थी शब्द लिखिए : ४
१.६.१ तिथि वार
१.६.२ आज्ञा आदेश

{३०}

भाग ख

प्रश्न दो

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका संक्षिप्त विवरण कीजिए {१०}

उस दिन बड़े सवेरे श्यामू की नींद खुली, --घर-भर में कुहराम मचा हुआ है । उसकी काकी-उमा-एक कम्बल पर नीचे से उपर तक एक कपड़ा ओढ़े हुए भूमि-शयन कर रही है । घर के सब लोगे करुण स्वर में विलाप कर रहे हैं ।

लोग जब उमा को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे . तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया । लोगों के हाथों से छूटकर वह उमा के ऊपर जा गिरा । बोला-काकी तो सो रही हैं । मैं न ले जाने दूँगा ।

लोग बड़ी कठिनता से उसे हटाया । काकी के अग्नि-संस्कार में भी वह न जा सका । एक दासी राम-राम करके उसे घर पर ही सँभाले रही ।

बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है . परन्तु सत्य बहुत समय तक छिप न रह सका । अन्य अबोध बालकों के मुँह से ही वह प्रकट हो गया । काकी के लिए कई दिन तक लगातार रोते —उसका रुदन तो कमशः शान्त हो गया, परन्तु शोक शान्त न हो सका । वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता ।

एक दिन उसने ऊपर एक पतंग उड़ती देखी । न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा । विश्वेश्वर के पास जाकर बोला-काका मुझे एक पतंग मँगा दो । अभी मँगा दो ।

पत्नी की मृत्यु के बाद से विश्वेश्वर बहुत अन्यमनस्क से रहते थे । “अच्छा . मँगा दूँगा” ।

उस दिन बड़े सवेरे श्यामू की नींद खुली, तब उसने देखा --घर-भर में कुहराम मचा हुआ है । उसकी काकी-उमा-एक कम्बल पर नीचे से उपर तक एक कपड़ा ओढ़े हुए भूमि-शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे घेरकर बड़े करुण स्वर में विलाप कर रहे हैं ।

लोग जब उमा को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे . तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया । लोगों के हाथों से छूटकर वह उमा के ऊपर जा गिरा । बोला-काकी तो सो रही हैं । उन्हें इस तरह उठाकर कहाँ लिए जा रहे हो ? मैं न ले जाने दूँगा ।

लोग बड़ी कठिनता से उसे हटा पाए । काकी के अग्नि-संस्कार में भी वह न जा सका । एक दासी राम-राम करके उसे घर पर ही सँभाले रही ।

यद्यपि बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है . परन्तु असत्य के आवरण में सत्य बहुत समय तक छिप न रह सका । आसपास के अन्य अबोध बालकों के मुँह से ही वह प्रकट हो गया । यह बात उससे छिपी न रह सकी कि काकी और कहीं नहीं , पर राम के यहाँ गई है । काकी के लिए कई दिन तक लगातार रोते —रोते उसका रुदन तो कमशः शान्त हो गया, परन्तु शोक शान्त न हो सका । जिस तरह वर्षा के अनन्तर एक ही दो दिन में पृथ्वी के ऊपर का पानी अगोचर हो जाता है, परन्तु बहुत भीतर तक उसकी आर्द्रता बहुत दिन तक बनी रहती है, उसी प्रकार वह शोक उसके

अन्तस्तल में जाकर बस गया । वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता ।

एक दिन उसने ऊपर एक पतंग उड़ती देखी । न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा । विश्वेश्वर के पास जाकर बोला-काका मुझे एक पतंग मंगा दो । अभी मंगा दो ।

पत्नी की मृत्यु के बाद से विश्वेश्वर बहुत अन्यमनस्क से रहते थे । “अच्छा . मंगा दूँगा” । कहकर वे उदास भाव से बाहर चले गए ।

{१०}

भाग ग

प्रश्न ३

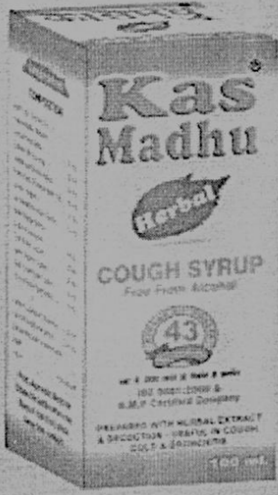
३.१ निम्न विज्ञापन को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न का उत्तर दीजिए ।

(२३)

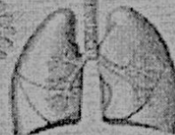
१

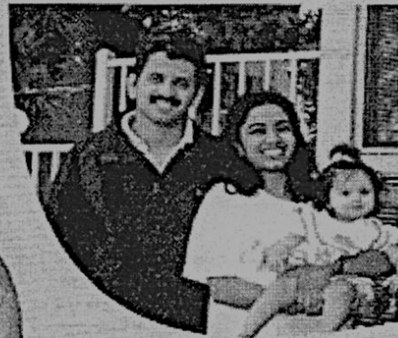
फलू में भी लाभकारी

कासमधु®



आयुर्वेदिक डाक्टर
का बनाया हुआ
फार्मूला





खांसी, नजला, जुकाम के लिए आयुर्वेदिक नड़ी-बूटियों का योग

- कासमधु एल्कोहल रहित है। यह फेफड़ों व गले की नली में जमे बलगम को पतला करके बाहर निकालता है।
- सूखी व बलगमी खांसी में तुरन्त राहत पहुँचाता है।
- यह नजला व जुकाम में भी गुणकारी है।
- बच्चों के लिए भी सुरक्षित है।

स्वास्थ्य, सौंदर्य एवं यौवन का रक्षक

कामनी सुधा®



- ✓ प्रदर, रक्त की कमी, हाथ पाँव, कमर पेट और जोड़ों में दर्द जलन, चक्कर आना, थकान, कमजोरी एवं अन्य रोगों में लाभप्रद।
- ✓ हार्मोनल असंतुलन व गर्भाशय संबंधी आयुर्वेदिक टोनिक।
- ✓ पाचन शक्ति तथा भूख बढ़ाये व कब्ज दूर करें।

आँवला, हिना, ब्राह्मी के गुणों से युक्त

केश जीवन तेल®



प्राकृतिक हर्बल हेयर आयल

- ✓ बालों का झड़ना/टूटना रोके, लम्बा, घना व काला बनाये
- ✓ पोषक तत्वों से भरपूर, घिपघिपाहट रहित।
- ✓ सन स्ट्रोक से रक्षा करें।
- ✓ बालों को मजबूती दें और सस्ती भी मिटाए।

ISO 9001 : 2000
& G.M.P.
Certified Co.

Mfd. by : **TULISON PHARMA®**, Delhi-7
 Helpline : 011-23697278, 23694235 Fax : 011-23693500
 E-mail : tulisonpharma@kasmadhu.in Website : www.kasmadhu.in

अन्य प्रमुख उत्पाद : रोमा तेल (जोड़ों के दर्द के लिए), द्यू-लिव (लीवर टॉनिक), पठानी तेल टैंव (जोश व आनन्द के लिए)

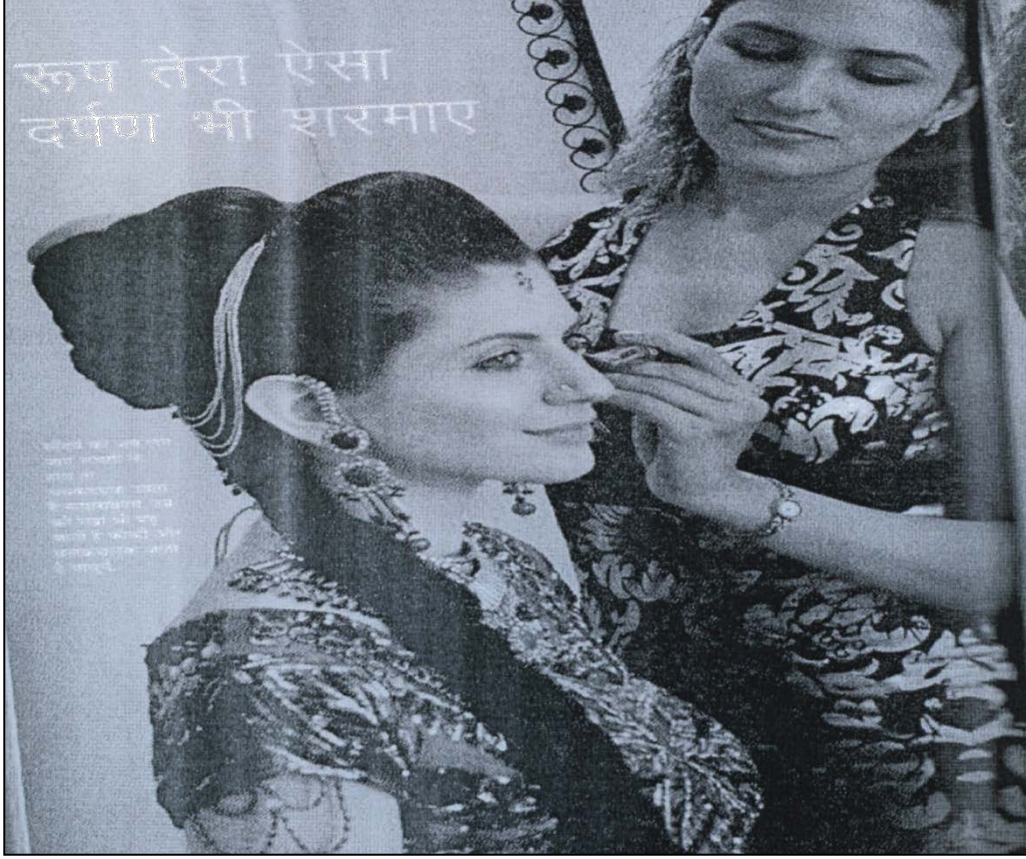
२

- ३.१ इस पन्ने पर क्या विज्ञापित गए है ? ४
कासमधु और केश जीवन तेल
- ३.२ विज्ञापन १ में परिवार का चित्र क्यों प्रयोग किया गया है ? ४
वह वस्तु पुरा परिवार प्रयोग कर सकते है । पुरा परिवार सुरक्षित रह सकते है ।
- ३.३ विज्ञापित २: “ स्वास्थ्य, सौंदर्य एवं यौवन का रक्षक” का अर्थ बताइए । ४
इस वस्तु लोगों का शरीरिक दशा खुबसूरती और युवापन की इच्छा को सफलता की ओर ले जाती है ।
- ३.४ विज्ञापन १: “ सूखी व बलगमी खांसी में तुरन्त राहत पहुँचाता है” अपने शब्दों
हिन्दी में समझाइए । ४ अन्य तरह की खांसी को तत्काल ठीक कर सकते है ।
- ३.५ विज्ञापन २: “केश जीवन तेल” इन शब्द को विज्ञापन २ मे क्या लाभ उठा सकते हैं
। ४ बाल का जीवन को लम्बी बनाते है ।
- ३.६ इन विज्ञापन को देख कर आप में क्या भावना जागृत होते हैं । ३
स्वास्थ्य और शरीर का रक्षा । अरोग्यता का स्वाभाविक ढंग ।

प्रश्न ४

निम्नलिखित चित्र को ध्यान पूर्वक देखकर प्रश्नों का उत्तर दीजिए ।

१७



- ४.१ इस चित्र का शीर्षक क्या हो सकता है। आप का उत्तर का कारण दीजिए। ४
श्रृंगार चित्र में स्त्री का श्रृंगार हो रही है।
- ४.२ इस अवसर पर क्या क्या श्रृंगार हाते हैं? ४
आभूषण कपड़े बालों का श्रृंगार महंदी
- ४.३ इस चित्र को देखकर कौन सा भावना उत्पन्न होते हैं। उत्तर का कारण दीजिए? ४
सुख का भावना। सजावट केवल सुख में होती है।
- ४.४ इस चित्र किस को और क्या उपदेश देती है। ५
स्त्री को। अगर आप श्रृंगार करना चाहते हैं तो ऐसा करना कि दर्पण भी शरमाए

{४०}
[८०]

Total: 80 marks